B.A.(Education),Part-1,Paper-ll,
Presented- Dr.Pallavi,
Topic- मेकाले का विवरण पत्र(Macaulay's Minute 1835)

6.5.1 मैकाले का विवरण पत्र (Macaulay's Minute 1835) थॉमस बैविंस्टन मैकाले (1800-1858)को अंग्रेजी भाषा का पूर्ण जान था। यह कवि, निबन्धकार तथा इतिहासकार था। इंग्लैंड का इतिहास उसकी प्रसिद्ध पुस्तक है। वह इंग्लैंड की राजनीति में भी दखते रखता था। पार्टी तथा लिबरल पार्टी से उसके अच्छे सम्बन्ध थे । बह ग्रीक, लैटिन भाषा का जानकार था और राजनीति तथा इतिहास में उसकी रूचि थी। 1818 में उसने त्रिनिटी कॉलेज कैम्ब्रिज में दाखिला लिया। वह एक अच्छा वक्ता और कुशल लेखक था । उसने नाईट मैगजीन तथा एडिन बर्ग रिव्यू का सम्पादन किया। वह अपने समय के साहित्यिक जगत में शीर्ष स्थान पर था।

मैकाले ने 1815 से ही इंग्लैण्ड की राजनीति में भाग लेना आरम्भ कर दिया। 1830 में उसने जॉन स्टुअर्ट मिल पर एक लेख लिखा , जिससे प्रभावित होकर लैंस डाउन ने मैकॉले का नाम पार्लियामेंट के चुनाव में उम्मीदवार के लिए प्रस्तुत कर दिया। 1830 में मैकॉले ब्रिटिश पार्लियामेंट का सदस्य बन गया और पार्लियामेंट की कार्यवाही में भाग लेने लगा । उच्च श्रेणी का वक्ता तथा पार्लियामैटेरियन के रूप में उसने खूब नाम कमाया।

मैकाले को भारत में कौंसिल ऑफ इण्डिया के लीगल एडवाइजर के रूप में आमंत्रित किया गया । वह 10 जून 1834 को भारत आया। अंग्रेजी शिक्षा की उभरतो माँग को दखतें हुए उसे जनरल कमेटी ऑफ इंडिया का आधा बताया गया।

इसके पूर्व भारत में प्राची- प्रतीच विवाद एक
विकराल रूप ले चुका था । इसी विवाद को सुलझाने का भार मैकाले को सौंपा गया।

लॉर्ड मैकाले (Lord Macaulay) की विद्वता तथा योग्यता में कोई कमी न थी। मैकाले जिस समय में भारत आया उसने अंग्रेजों को वैभवशाली बनाने का संकल्प लिया। उसने लोक शिक्षा समिति के अध्यक्ष को हैसीयत से शिक्षा सम्बन्धी सुझाव प्रस्तुत किया । उसने 1813 ई० के घोषणा पत्र को धारा 43 को स्पष्ट किया तथा अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

1. ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर एक लाख रुपया प्रति वर्ष शिक्षा पर खर्च करने की बाध्यता है ।
कम्पनो स्वेच्छा से इस धनराशि को व्यय कर सकती है।

2. 1813 ई० के घोषणा पत्र में साहित्य शब्द का उल्लेख है। यह साहित्य केवल संस्कृत, अरबी तथा फारसी में का ही नहीं, अपितु अंग्रेजी भाषा का भी हो सकता है।

3. भारत के विद्वानों का प्रोत्साहन से अभिप्राय उन विद्वानों से है जिन्हें लोग मिल्टन आदि की सफलताओं का उच्च ज्ञान हो न्यूटन की भौतिकी निपुणता हो तथा हिन्दू शास्त्र कठस्भ हो।

मैकाले के इस प्रतिवेदन ने प्राची प्रतीची विवाद को समाप्त कर दिया। मैकाले एक ऐसा विद्वान जो भारत के प्रति पूर्ण रूप से पूर्वाग्रह युक्त था।

मैकाले के पूर्वाग्रह

मैकाले के भारतीय शिक्षा साहित्य तथा संस्कृति के प्रति पूर्वाग्रह विचार इस प्रकार है ----

भारतीय भाषाएँ दुर्बलता का शिकार-मैकाले का कहना था-भारतीयों में प्रचलित क्षेत्रीयभाषायें साहित्यिक एवं वैज्ञानिक दुर्बलता का शिकार हैं । वे पूर्ण अपरिष्कृत तथा असभ्य है उन्हें किसी भी बाह्म शब्द भण्डार द्वारा इस स्थिति में विकसित नहीं किया जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में उस भाषा द्वारा लिखी अन्य भाषा के साहित्य एवं विज्ञान के अनुवाद की कल्पना कर पाना असम्भव है।

भाषा तथा साहित्य का अभ्यास-मैकाले ने भारतीय साहित्य तथा भाषा का अपमान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसने कहा यद्यपि मैं संस्कृत एवं अरबी भाषा के ज्ञान से अनभिज्ञ हूँ । किन्तु श्रेष्ठ यूरोपीय पुस्तकालय की मात्र एक अलमारी भारतीय एवं अरबी भाषाओं एवं सम्पूर्ण साहित्य से अधिक मूल्यवान है। इस तथ्य को प्राच्यवादी सहर्ष स्वीकार करें।

अंग्रेजी भाषा का महत्व-मैकाले ने अंग्रेजी भाषा के ज्ञान तथा दक्षता को इंग्लैड तथा कम्पनी शासन के लिए महत्वपूर्ण बताया है। मैकाले के शब्दों में यह भाषा पाश्चात्य भाषाओं में भी सर्वोपरि हैं। जो इस भाषा को जानता है। वह सुगमता से उस विशाल भण्डार को प्राप कर लेता है जिसकी रचना विश्व के श्रेष्ठतम व्यक्तियो ने की है ।

अंग्रेजी भाषा का समर्थन
मैकाले ने अंग्रेजी भाषा का शिक्षण तथा शिक्षा के समर्थन के विषय में ये विचार प्रकट किये ।
(i) अंग्रेजी, विश्व में शासकों की भाषा है ।
(ii)अंग्रेजी भाषा में विश्व का सर्वश्रेष्ठ साहित्य उपलब्ध हैं ।
(iii) अंग्रेजी भाषा तथा संस्कृति के अनेक राष्ट्रों को जंगली अवस्था से उठा कर सभ्य बनाया है । (iv) अंग्रेजो भाषा से भारत में नवीन संस्कृति का निर्माण होगा।
(५) प्राच्य भाषा तथा साहित्य का अध्ययन छात्रवृत्तियाँ देकर कराया जाये किन्तु अंग्रेजी में छात्र स्वयं के खर्च से सीखता है।
(vi) हिन्दुओं तथा मुस्लिमों को अरबी तथा हिन्दू शास्त्रों के अनुसार केवल कुछ लोगों को प्राच्य भाषा का ज्ञान देकर न्याय दिलाया जा सकता है। काम चलाया जा सकता है। इसके लिए प्राच्यविदों की फौज तैयार करना न्याय संगत नहीं है

मैकाले के हास्यास्पद विचार-मैकाले एक विद्वान था। किन्तु भारत के विषय में उसके विचार कुछ भारतवासियों को हास्यास्पद लगते थे । वह प्राच्य विज्ञान तथा साहित्य का उदाहरण अपनी वाकपटुता तथा तर्क द्वारा हो देता रहा। उसने एक स्थान पर कहा है- जब हम सच्चा इतिहास तथा दर्शन पढ़ा सकते हैं तो क्या हम उस चिकित्सा विज्ञान को जिस पर अंग्रेजी पशु चिकित्सकों को भी लन्जा आयेगी, उस ज्योतिष शास्त्र को ,जिस पर अंग्रेजी स्कूलों की बालिकायें हँसेंगी ।उस इतिहास को जिसमें 30 फीट लम्बे राजाओं का वर्णन है, जो 30,000 वर्ष तक राज्य करते हैं और उस भूगोल को जिसमें शोरें तथा मक्खन के समुद्रों का वर्णन है, शिक्षा का विषय बनाना चाहेंगे और इसकी प्रगति के लिए प्रयत्न करेंगे?

मैकाले ने अपने प्रतिवेदन में अंग्रेजों का लक्ष्य निर्धारित करते हुए कहा है- हमें अपने तथा उन लाखों लोगों जिन पर हम राज्य करते हैं के मध्य संप्रेषकों का ऐसा वर्ग तैयार करना है जो रंग एवं रक्त में भारतीय होगा किन्तु रूचि, विचार, नैतिकता तथा बुद्धि में अंग्रेज होगा। हमें उस वर्ग पर जन भाषा का विकास पाश्चात्य मानदण्डों के अनुरूप करना होगा।
मैकाले ने अपना प्रतिवेदन अपनी अनुशंसाओं के साथ तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक के पास स्वीकृति के लिए भेज दिया ।

6.5.2 मैकाले के विवरण पत्र की समीक्षा (Critical Devised of Macaulay's Minute)

मैकाले की नियत भारतीयों के प्रति ठीक नहीं थी। शासक वर्ग का होने के कारण वह भारतीयों को हीन दृष्टि से देखता था। वह भारतीय धर्म, संस्कृति तथा दर्शन को मूल से समाप्त करना चाहता था। मैकाले ने अपनी इस इच्छा को अपने पिता को लिखे पत्र में व्यक्त किया है 'यह मेरा दृढ विश्वास है कि यदि हमारी शिक्षा योजना को लागू किया जाता है तो 30 वर्ष पश्चात् बंगाल के उच्च वर्ग में कोई भी मूर्ति उपासक नहीं रहेगा।

मैकाले की शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थों

1. प्राच्य प्रतीची विवाद में तर्क पूर्ण निर्णय लिया गया।
2. उसने पाश्चात्य भाषा साहित्य ज्ञान विज्ञान का पक्ष लिया ।
3. प्रगतिशील शिक्षा का समर्थन किया गया।
4. शिक्षा में धार्मिक तटस्थता की नीति प्रस्तुत की।

5. उसने ।813 के घोषणा पत्र की धारा 43 को पक्षपात पूर्ण व्याख्या की।

6. प्राच्य साहित्य पर पूर्वाग्रह पूर्ण आख्या प्रस्तुत की।
7. केवल उच्च वर्गा को शिक्षा की व्यवस्था पर बल दिया

8. शिक्षा के बनाये सिद्धान्त को पुष्टि की।

मैकाल का प्रतिवेदन भारतीय शिक्षा के आधुनिक इतिहास को नींव का पत्थर है। इस प्रतिबंदन में मैकाले ने केवल अंग्रेज शासको तथा ब्रिटिश की सरकार के हितों की दृष्टि से विचार किया। इस प्रतिदिन का तात्कालिक प्रभाव इस प्रकार है ।
1. मैकाले 1813 के घोषणा पत्र की भाग 43 की व्याख्या अत्यन्त चतुराई से की और भारत में पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान के अध्ययन था प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया ।

2. भारत में अंग्रेजी प्रणाली शिक्षा की शुरुआत हुई।
3. सरकारी काम काज अंग्रेजी भाषा में होने लगा।
4. सरकारी नौकरियां में अंग्रेजी अनिवार्य कर दी गयी ।

उपराक्त तात्कालिक प्रयासों के साथ साथ भारतीय जनजीवन पर मैकाले की नीति का दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव वर्तमान भारतीय समाज में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है । इस प्रतिवेदन का तात्कालिक प्रभाव इस प्रकार था--

1. भारत के लोगों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाश्चात्य साहित्य ज्ञान विज्ञान की जानकारी होने लगी और उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आने लगा।

2. भारत में भौतिक प्रगति दिखायी देने लगी।

3. सामाजिक रूढ़िवादिता समाप्त होने लगीऔर सामाजिक जागरूकता का जन्म होने लगा ।

4. राजनीतिक चेतना का विकास होने लगा ।

5. आज हम देखते हैं कि भारत में अंग्रेजी हमारे जनजीवन की भाषा बन गया है। यह सब मैकाले का प्रतिवेदन के कारण है।

6. भारतीय जीवन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा।

मैकाले भारत में केवल उच्च वर्ग को शिक्षा देने का समर्थक था। 1835 में लार्ड आकलैण्ड (Lord Ackland) भारत में गवर्नर जनरल बनकर आया। उस पर मैकाले के विचारों का बहुत प्रभाव था। उसने प्राच्यवादियों को प्रसन्न करने के लिए 31 हजार रुपया प्रति वर्ष अतिरिक्त सहायता स्वीकृति कर दी और 24. नवम्बर 1839 को अपनी शिक्षा नीति घोषित की- 'सरकार के प्रयास समाज के उच्च वर्ग के व्यक्तियों में उच्च शिक्षा का प्रसार करने तक सीमित रहने चाहिए। जिनके पास अध्ययन के लिए काफी अवकाश (समय) है और जिनकी संस्कृति छन-छन कर जन साधारण तक पहुँचेगी।'

6.5.3 गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक की विज्ञप्ति (Governor General William Bentick's Proclamation)

लार्ड विलियम बैंटिक मद्रास का गवर्नर धा। बाद में ,वह गवर्नर जनरल ऑफ इण्डिया बनाया गया। विलियम बैंटिक को उसके तमाम सुधार कार्यों के लिए जाना जाता है । उसने कानून बनाकर सती प्रथा समाप्त की। ठगों का नाश किया। कन्या हत्या पर रोक लगायो, तत्कालीन समाज में फोलो अनेक कुप्रथाओं का अंत किया। बेंटिक के प्रशासनिक तथा आर्थिक सुधारों के लिए भी जाना जाता है।

बैटिक समाज सुधार के लिए शिक्षा को आवश्यक मानता था। वह भारत में अंग्रेजी शिक्षा का समर्थक था। उसने मैकाले द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन को स्वीकार करते हुए ,7 मार्च 1835 को एक प्रस्ताव पास 1 किया। बैठक का प्रस्ताव इस प्रकार था ।
मै अपनी सम्पूर्ण सहमति, मैकाले द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के विचारों को देता हूँ । प्रस्ताव इस प्रकार है -भारत के गवर्नर जनरल ने पब्लिक इन्सट्रक्शन कमेटी के संकेश्डरी के दायित्वों 21 एवं 22 जनवरी 1935 को दृष्टिगत किया और तथ्यों पर विचार किया।
प्रथम-काउंसिल के विचार में ब्रिटिश सरकार का यह महान् उद्देश्य है कि भारतीयों के मध्य यूरोपीय साहित्य तथा ज्ञान का प्रसार किया जाय।
द्वितीय-किन्तु सरकार का इरादा भारतीयों को शिक्षा संस्थाओं को समाप्त करने का नहीं है। भारतीय स्वयं इस दायित्व को प्राप्त करेंगे। इस प्रस्ताव को स्वीकृति के बाद इन संस्थाओं में प्रवेश लेने बालों छात्रों को छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी। साथ रिक्त पदों को भरने की स्वीकृति भी नहीं मिलेगी ।कमेटी की रिपोर्ट पर इन संस्थाओं को चलाने पर विचार किया जायेगा|

तृतीय-गवर्नर जनरल के संज्ञान में यह भी आया है कि भारतीय साहित्य को प्रकाशित करने पर अत्यधिक व्यय किया गया है, भविष्य में इस कार्य के लिए धन व्यय नहीं किया जायेगा।

चतुर्थ-गवर्नर जनरल की कौंसिल यह निर्देश देती है कि भविष्य में भारतीयों को अंग्रेजी माध्यम से साहित्य तथा विज्ञान की शिक्षा देने पर धन व्यय किया जाय । गवर्नर जनरल महोदय यह अपेक्षा भौ करते हैं कि सभी संभावनाओं को ध्यान में रखकर कार्यकारी योग्यता बनायी जाय।

ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में शिक्षा सम्बन्धी यह प्रथम घोषणा थी। इस घोषणा से शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम एवं शिक्षा के माध्यम निश्चित हो गये पाश्चात्य विज्ञान, साहित्य तथा कला को मुख्य लक्ष्य के रूप में स्वीकृत दी गयी । लार्ड विलियम बैंटिक की 7 मार्च 1835 की इस घोषणा के बाद भारत में योरोपीय साहित्य

विज्ञान तथा कला की प्रगति का कार्य प्रशस्त हो गया । 1835-36 में सरकारी स्कूलों की संख्या 23 थी, जिसमें 53-90 छात्र पढ़ते थे। इनमें से 1813 छात्रों की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी थी। 1841-42 में यह संख्या 52 हो गयी । छात्र संख्या 8203 थी, जिनमें 5000 छात्र अंग्रेजी माध्यम के थे।

लार्ड विलियम बैंटिक ने मैकाले के प्रतिवेदन को 7 मार्च 1835 को स्वीकार कर लिया । इस सिफारिशों के आधार पर लॉर्ड बैंटिक ने ब्रिटिश सरकार की नयी शिक्षा नीति की घोषणा कर शिक्षा संबंधी सभी प्रकार के विवादों को समाप्त कर दिया । इस शिक्षा नीति की प्रमुख घोषणायें निम्न प्रकार थीं--

1. शिक्षा के लिए निर्धारित धनराशि का उपयोग केवल अंग्रेजी के लिए किया जायेगा।
2. संस्कृत, अरबी, फारसी शिक्षा संस्थायें यथावत् चलेंगी और उनमें पढ़ने व उन्हें चलाने वालों को छात्रवृत्ति तथा अनुदान मिलेगा।
3. भविष्य में प्राच्य साहित्य के मुद्रण और प्रकाशन पर कोई व्यय नहीं किया जायेगा।
4. उपरोक्त मे से बची राशि को अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य के विकास पर व्यय किया जायेगा।

लार्ड विलियम बैंटिक से मैकाले के प्रतिवेदन को स्वीकृति मिलते ही भारत में नयो अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को शुरूआत हो गयी और पाठ्यक्रम में पाश्चात्य साहित्य तथा विज्ञान को स्थान मिल गया ।
बैंटिक की इस घोषणा के परिणाम इस प्रकार ये

1. कलकत्ता मदरसा तथा संस्कृत कॉलेज को बनारस से मान्यता मिल गयी।

2.प्राच्य कॉलेज आगरा, दिल्ली तथा कलकत्ता में स्थापित हुए ।

3. कलकत्ता प्रेस की स्थापना से भारतीय साहित्य का प्रशासन होने लगा।

4. अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य के प्रति भारतीयों में रुचि विकसित होने लगी।
5.1854 तक शिक्षा नीति का अभाव रहा। कोई समाज शिक्षा नीति नहीं थी ।

6. विभिन्न प्रांत में शिक्षा की स्थिति भिन्न थी, केन्द्र सरकार का इस सम्बन्ध में कोई निर्देश नहीं था।

7. माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में बौद्ध होने लगी किन्तु प्राथमिक तथा मिशनरियों द्वारा संचालित होती रही।

8. विद्यालय के निरीक्षण तथा शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था न धी।

9. किताबी ज्ञान का विस्तार हुआ। विज्ञान शिक्षा का स्तर सामान्य था।

10.गैर सरकारी क्षेत्रों में भारतीय शिक्षा संस्थान विकसित होती रही ।

6.6 एडम्स रिपोर्ट (Adam's Report) : .

विलियम एडम्स(1789-1868) भारत में 27 वर्षों तक रहा । वह पत्रकारिता तथा शैक्षिक सर्वेक्षण के माध्यम से यह भारत की सेवा करना चाहता था। उसने 1835 से लेकर 1838 तक बंगाल में शिक्षा की परिस्थिति का अध्ययन किया तथा एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट प्रस्तुत की।

विलियम एडम्स का जन्म स्काटलैंड में हुआ था। 1815 में वह पादरी बन गया 1815 में वह श्रीरामपुर आया। उसने बंगाल तथा संस्कृत का अध्ययन किया। कलकत्ता में वह राजा राममोहन राय के सम्पर्क में आया। राममोहन राय तथा एडम्स दोनों एक-दूसरे से प्रभावित थे। एडम्स तो राममोहनराय से इस कदर प्रभावित हुआ कि उसने 1821 में चर्च से अपने सभी सम्बन्ध समाप्त कर लिये । वह अद्वैतवादी हो गया।

एडम्स को 20 जनवरी, 1835 के विलियम बैंटिक ने बंगाल की शैक्षिक परिस्थितियों का सर्वेक्षण करने के लिए कमिश्नर नियुक्त किया, उसने अपनी रिपोर्ट को तीन भागोंमें 1835 तथा 1838 में प्रस्तुत कौं।

प्रथम रिपोर्ट, 1835

बंगाल में भारतीयों द्वारा चलाये जा रहे थे विद्यालय, धार्मिक संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे विद्यालयों से अधिक संख्या में थे। यदि एक विद्यालय पर एक रुपया प्रति माह खर्च आता है तो 12 लाख रुपये सालाना से भी कम खर्च आता है। बंगाल एवं बिहार की 40,000,000 जनसंख्या में 100,000 विद्यालय थे। 400 व्यक्तियों पर एक विद्यालय था।'

द्वितीय रिपोर्ट, 1838

एडम्स की दूसरी रिपोर्ट राजस्थान जिला, नागौर थला में कुछ चुने हुए सर्वेक्षण कार्य पर आधारित थी। उस समय थाना की जनसंख्या 195,640 मुस्लिम एवं 65,650 हिन्दू थे। गाँवों को संख्या 455 थी, इनमें कुल 27 प्राइमरी स्कूल थे । जिनमें 262 विद्यार्थी थे। इनमें से 10 बंगाली स्कूल थे जिनमें 167 छात्र थे, 4 पार्शियन स्कूल में, छात्र संख्या 23 थी, ।। अरबी स्कूल थे, छात्र थे 42-238 गाँवों के 1,588 परिवारों से 2342 बालक शिक्षा प्राप्त करते थे। विद्यालय में प्रवेश को औसत आयु वर्ग यो और विद्यालय छोड़ने की 14 वर्ष । शिक्षकों का औसत वेतन 5 से 8 रूपये मांसिक था ।

तृतीय रिपोर्ट, 1838

एडम्स ने इस रिपोर्ट में यह स्वीकार किया कि उसके आकडे अनुमान से नीच थे उसका कहना था यदपि मै यह विश्वास करता हूँ कि प्राप्त आकडे विश्वसनीय है, किन्तु एक जिले में भी कार्यकर्ताओं ने कई क्षेत्रों में भ्रमण नहीं किया। बास्तविक रूप में यह संभव भी नहीं था। फिर भी किसी न किसी तरह सूचना प्राप्त हुई । इस रिपोर्ट में आकडो का संकलन भारतीय विद्यालय के विकास हेतु किया गया है ।

एडम्स रिपोर्ट का मूल्यांकन (Evaluation of Adam's Report) एडम्स की तीसरी रिपोर्ट से पहले ही मैकाले विचार का स्मोकृति मिल चूकी थी। मैकाले की भाँति एडम्स अंग्रेजी को शिक्षा का एकमात्र माध्यम वनाने के पक्ष में नहीं था। एइम्म को संस्तुतिया व्यावहारिक थीं। परंतु मैकॉल के विपणन-पत्र में इसकी भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लग गया।

कुछ विद्वानों का मत है कि यदि एडम के सुझावो को मान लिया जाता तो भारत में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में प्राप्त सुधार होते और वह भारतीयों की आशा के अनुरूप होतो।

6.7 सारांश (Summary)

ब्रिटिश कालीन भारतीय शिक्षा का प्रारंभ भारत में ईसाई धर्म के प्रसार तथा भारत में व्यापार के लिए आये ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारी गणों को सुविधा के लिए हुआ था। ब्रिटिश कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भारतीयों का नैतिक व बौद्धिक विकास करना, भारत में यूरोपियन साहित्य व विान का प्रसार करना, भारतीयों का आर्थिक विकास करना तथा भारत में ब्रिटिश शासन को सहायता के लिए भारतीयों को तैयार करना था। यद्यपि ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने देश के लिए अनेक लाभदायक कार्य किये। फिर भी पह शिक्षा देश की शैक्षिक

आवश्यकता को पूरा करने में असफल रही। शिक्षा योजना बनाते समय राष्ट्रीय आवश्यकता व क्षमताओं को अनदेखा करके ब्रिटिश हितों का ध्यान रखा जाता था। अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने से भारतीयों के मौलिक चिन्तन का हास हुआ। भारतीय संस्कृति की अवहेलना से भारतीयों का धार्मिक व नैतिक पतन हुआ। निम्नवत् वनीकरण के सिद्धान्त जनसाधारण की शिक्षा को कोई ताभ न हो सका। यद्यपि अंग्रेजों का उद्देश्य संभ्रांत व उच्च वर्ग के भारतीयों को शिक्षित करके तथा उन्हें शासन में उच्च पद देकर अपने शासन को दृढ़ करने तथा भारतीयों के शोषण में उनकी सहायता लेने का था। प्रारम्भ में पाश्चात्य ढंग से शिक्षित अनेक नागरिकों ने स्वतंत्रता के प्रयासों का विरोध किया भी, परन्तु कालान्तर में पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त नागरिकों व स्वदेश प्रेमियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

6.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. भारत में आधुनिक शिक्षा के विकास में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रयासों की चर्चा करें। (Describe the efforts of East India Company for development of modern
education in India.)

2. मैकाले का ऐतिहासिक दस्तावेज भारतीय शिक्षा नीति का निर्धारक कहा जाता है।अपने विचार प्रकट कीजिए।

(The historical minutes of Macaulay is called the guiding principles of
Indian education.)